

Padma Shri



PANDIT SURENDRA MOHAN MISHRA (POSTHUMOUS)

Pandit Surendra Mohan Mishra was a Hindustani Classical singer who promoted the musical tradition of Banaras Gharana.

2. Born on 11th May, 1941 in the family of Benares Gayan Gharana, the music maestros preceding with the dignified names like Pandit Prassiddu-Manohar Mishra who was the descendant of Pandit Dilaram Mishra (maternal uncle of Tansen), Pandit Mishra was blessed with deep proclivity for music even in his childhood, which resulted in his travels to Maldah and Kolkata with his uncle Pandit Vishnu Sewak Mishra. He was groomed by his Uncle Pandit Ramakrisna Mishra into a mellifluous singer. Pandit Ganesh Das Mishra guided him to play tabla. He participated in various music concerts and competitions where he procured both Gold medals and eminence during these sojourns. He had also worked as an assistant to Smt. Siddheshwan Devi and Shri Sambhu Maharaj at Bharatiya Kala Kendra, Delhi in 1966. His dedication brought him to Pandit Ramsahay Sangeet Vidyalyaya in 1970, Central Hindu Girls School in 1973 as a music teacher.

3. During his years of service at this seat of learning, Pandit Mishra organised Sita Swayamvar, Sampoorna Ramayana, Ashta Prahar with his pupils. Krishna Leela, Sapoorna Bharat Kay Nritya was put up on stage. He played a key role in taking Indian music and dance beyond the boundaries of the nation as well. Group Song and Dance were skillfully presented for the spectators of Nepal under his inspiring guidance. In 1973, he won Gold Medal in Sangeet Praveen Examination at Prayag Sangeet Samiti, Allahabad.

4. Pandit Mishra had done significant work in music, composed many classical and semi classical bandish and carried his deft into popular folk music and composition of Geet, Ghazals, Bhajan as well. He carried forward the tradition of Banaras Gharana to the voyage and teaches numerous disciples. He was the chief mentor of a workshop organized by Kshetriya Sanskritik Kendra of the State Government of Uttar Pradesh for aspiring artists in 1998. In the year 2014, Sangeet Natak Academy, Delhi conducted an archive recording of his prolific singing performance. Under his guidance, his sons had completed research on the Musical History of Banaras Gharana. One Ph.D was completed in Banaras Hindu University on his composition & contribution.

5. Pandit Mishra was the recipient of various Awards and Honours in the field of "Shastriya, Upshastriya & Sugam Sangeet". He had won the West Bengal Gold Medal Award in 1951; Sangeet Praveen Gold Medal Award in 1973; Roterian Award in 1996; Sangeet Ganga Award in 2004; Pritania Award - Navsadhana Kala Kendra in 2013; Ramsa Sangeet Samman in 2018; Pt. Ravishankar Musicorum Samman in 2018; Kashi Ratna Award in 2019 and Sangeet Natak Academy Award in 2020.

6. Pandit Mishra passed away on 19 November, 2023.

पद्म श्री



पंडित सुरेन्द्र मोहन मिश्र (मरणोपरांत)

पंडित सुरेन्द्र मोहन मिश्र हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायक थे जिन्होंने बनारस घराने की संगीत परंपरा को बढ़ावा दिया।

2. पंडित मिश्र का जन्म 11 मई, 1941 को बनारस गायन घराने के एक परिवार में हुआ था। उनके पूर्वजों में पंडित प्रसिद्ध-मनोहर मिश्र जैसे प्रतिष्ठित संगीत कलाकार शामिल थे, जो पंडित दिलाराम मिश्र (तानसेन के मामा) के वंशज में से थे। उन्हें बचपन से ही संगीत के प्रति गहरी रुचि थी। इसलिए वह अपने चाचा पंडित विष्णु सेवक मिश्र के साथ मालदा और कोलकाता चले गए। उनके चाचा पंडित रामकृष्ण मिश्र ने उन्हें एक मधुर गायक के रूप में तैयार किया था। पंडित गणेश दास मिश्र ने उन्हें तबला वादन सिखाया। उन्होंने विभिन्न संगीत समारोहों और प्रतियोगिताओं में भाग लिया जहां उन्होंने स्वर्ण पदक और प्रतिष्ठा दोनों अर्जित की। उन्होंने 1966 में भारतीय कला केंद्र, दिल्ली में श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी और श्री संभु महाराज के सहायक के रूप में भी काम किया था। संगीत के प्रति अपने समर्पण से, उन्होंने 1970 में पंडित रामसहाय संगीत विद्यालय, 1973 में सेंट्रल हिंदू गर्ल्स स्कूल में संगीत शिक्षक के रूप में कार्य किया।

3. शिक्षा के इस केंद्र में अपनी सेवा के वर्षों के दौरान, पंडित मिश्र ने अपने शिष्यों के साथ सीता स्वयंवर, संपूर्ण रामायण, अष्ट प्रहर का आयोजन किया। मंच पर कृष्ण लीला, संपूर्ण भारत के नृत्य का मंचन किया गया। उन्होंने भारतीय संगीत और नृत्य को देश की सीमाओं से परे ले जाने में भी अहम भूमिका निभाई। उनके प्रेरक मार्गदर्शन में नेपाल के दर्शकों के सम्मुख समूह गान एवं नृत्य कुशलतापूर्वक प्रस्तुत किया गया। 1973 में, उन्होंने प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद की संगीत प्रवीण परीक्षा में स्वर्ण पदक जीता।

4. पंडित मिश्र ने संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया, कई शास्त्रीय और अर्ध शास्त्रीय बंदिशों की रचना की और प्रचलित लोक संगीत और गीत, गजल, भजन में भी अपनी दक्षता का प्रदर्शन किया। उन्होंने बनारस घराने की परंपरा को आगे बढ़ाया और अनगिनत शिष्यों को संगीत की शिक्षा दी। वह 1998 में उत्तर प्रदेश सरकार के क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र द्वारा महत्वाकांक्षी कलाकारों के लिए आयोजित कार्यशाला के मुख्य परामर्शक थे। वर्ष 2014 में, संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली ने उनके शानदार गायन प्रदर्शन की एक संग्रह रिकॉर्डिंग की। उनके सुपुत्रों ने, उनके मार्गदर्शन में बनारस घराने के संगीत इतिहास पर शोध पूरा किया था। उनकी संगीत रचना और योगदान पर बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पीएच.डी की गई।

5. पंडित मिश्र को "शास्त्रीय, उपशास्त्रीय और सुगम संगीत" के क्षेत्र में विभिन्न पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए थे। उन्होंने 1951 में पश्चिम बंगाल स्वर्ण पदक पुरस्कार; 1973 में संगीत प्रवीण स्वर्ण पदक पुरस्कार; 1996 में रोटेरियन पुरस्कार; 2004 में संगीत गंगा पुरस्कार; 2013 में प्रितानिया पुरस्कार-नवसाधना कला केंद्र; 2018 में रामसा संगीत सम्मान; 2018 में पं. रविशंकर म्यूजिककोरम सम्मान; 2019 में काशी रत्न पुरस्कार और 2020 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्त किया।

6. पंडित मिश्र का 19 नवंबर, 2023 को निधन हो गया।